fgnh ekr`Hkk"kk ¼dksM 002½

कक्षा IX-X (2017-18)

नवीं कक्षा में दाखिल होने वाले विद्यार्थी की भाषा शैली और विचार बोध का ऐसा आधार बन चुका होता है कि उसे उसके भाषिक दायरे के विस्तार और वैचारिक समृद्धि के लिए ज़रूरी संसाधन मुहैया कराए जाएँ। माध्यमिक स्तर तक आते–आते विद्यार्थी किशोर हो गया होता है और उसमें सुनने, बोलने, पढ़ने, लिखने के साथ–साथ आलोचनात्मक दृष्टि विकसित होने लगती है। भाषा के सौंदर्यात्मक पक्ष, कथात्मकता / गीतात्मकता, अखबारी समझ, शब्द की दूसरी शक्तियों के बीच अंतर, राजनैतिक एवं सामाजिक चेतना का विकास, स्वयं की अस्मिता का संदर्भ और आवश्यकता के अनुसार उपयुक्त भाषा–प्रयोग, शब्दों के सुचिंतित इस्तेमाल, भाषा की नियमबद्ध प्रकृति आदि से विद्यार्थी परिचित हो जाता है। इतना ही नहीं वह विभिन्न विधाओं और अभिव्यक्ति की अनेक शैलियों से भी वाकिफ़ होता है। अब विद्यार्थी की पढ़ाई आस–पड़ोस, राज्य–देश की सीमा को लांघते हुए वैश्विक क्षितिज तक फैल जाती है। इन बच्चों की दुनिया में समाचार, खेल, फ़िल्म तथा अन्य कलाओं के साथ–साथ पत्र–पत्रिकाएँ और अलग–अलग तरह की किताबें भी प्रवेश पा चुकी होती हैं।

इस स्तर पर मातृभाषा हिंदी का अध्ययन साहित्यिक, सांस्कृतिक और व्यावहारिक भाषा के रूप में कुछ इस तरह से हो कि उच्चतर माध्यमिक स्तर तक पहुँचते–पहुँचते यह विद्यार्थियों की पहचान, आत्मविश्वास और विमर्श की भाषा बन सके। प्रयास यह भी होगा कि विद्यार्थी भाषा के लिखित प्रयोग के साथ–साथ सहज और स्वाभाविक मौखिक अभिव्यक्ति में भी सक्षम हो सके।

bl ikB;Øe dk vè;;u ls

(क) विद्यार्थी अगले स्तरों पर अपनी रुचि और आवश्यकता के अनुरूप हिंदी की पढ़ाई कर सकेंगे तथा हिंदी में बोलने और लिखने में सक्षम हो सकेंगे।

(ख) अपनी भाषा दक्षता के चलते उच्चतर माध्यमिक स्तर पर विज्ञान, समाज विज्ञान और अन्य पाठ्यक्रमों के साथ सहज संबद्धता (अंतर्संबंध) स्थापित कर सकेंगे।

(ग) दैनिक व्यवहार, आवेदन–पत्र लिखने, अलग–अलग किस्म के पत्र लिखने और प्राथमिकी दर्ज़ कराने इत्यादि में सक्षम हो सकेंगे।

(घ) उच्चतर माध्यमिक स्तर पर पहुँचकर विभिन्न प्रयुक्तियों की भाषा के द्वारा उनमें वर्तमान अंतर्संबंध को समझ सकेंगे।

(ङ) हिंदी में दक्षता को वे अन्य भाषा–संरचनाओं की समझ विकसित करने के लिए इस्तेमाल कर सकेंगे, स्थानांतरित कर सकेंगे।

d{kk 9 o 10 esa ekr`Hkk"kk dk :i esa fgUnh&f'k{k.k dk mís';

- कक्षा आठ तक अर्जित भाषिक कौशलों (सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना और चिंतन) का उत्तरोत्तर विकास।
- सृजनात्मक साहित्य के आलोचनात्मक आस्वाद की क्षमता का विकास।
- स्वतंत्र और मौखिक रूप से अपने विचारों की अभिव्यक्ति का विकास।
- ज्ञान के विभिन्न अनुशासनों के विमर्श की भाषा के रूप में हिंदी की विशिष्ट प्रकृति एवं क्षमता का बोध कराना।
- साहित्य की प्रभावकारी क्षमता का उपयोग करते हुए सभी प्रकार की विविधताओं (राष्ट्रीयताओं, धर्म लिंग, भाषा) के प्रति सकारात्मक और संवेदनशील रवैये का विकास।

- जाति, धर्म, लिंग, राष्ट्रीयताओं, क्षेत्र आदि से संबंधित पूर्वाग्रहों के चलते बनी रूढ़ियों की भाषिक अभिव्यक्तियों के प्रति सजगता।
- विदेशी भाषाओं समेत अन्य भारतीय भाषाओं की संस्कृति की विविधता से परिचय।
- व्यावहारिक और दैनिक जीवन में विविध किस्म की अभिव्यक्तियों की मौखिक व लिखित क्षमता का विकास।
- संचार माध्यमों (प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक) में प्रयुक्त हिंदी की प्रकृति से अवगत कराना और नए–नए तरीके से प्रयोग करने की क्षमता से परिचय।
- सघन विश्लेषण, स्वतंत्र अभिव्यक्ति और तर्क क्षमता का विकास।
- अमूर्तन की पूर्व अर्जित क्षमताओं का उत्तरोत्तर विकास।
- भाषा में मौजूद हिंसा की संरचनाओं की समझ का विकास।
- मतभेद, विरोध और टकराव की परिस्थितियों में भी भाषा के संवेदनशील और तर्कपूर्ण इस्तेमाल से शांतिपूर्ण संवाद की क्षमता का विकास।
- भाषा की समावेशी और बहुभाषिक प्रकृति के प्रति ऐतिहासिक नज़रिए का विकास।
- शारीरिक और अन्य सभी प्रकार की चुनौतियों का सामना कर रहे बच्चों में भाषिक क्षमताओं के विकास की उनकी अपनी विशिष्ट गति और प्रतिभा की पहचान।

f’k{k.k ;fDr;k

माध्यमिक कक्षाओं में अध्यापक की भूमिका उचित वातावरण के निर्माण में सहायक की होनी चाहिए। भाषा और साहित्य की पढ़ाई में इस बात पर ध्यान देने की ज़रूरत होगी कि

- विद्यार्थी द्वारा की जा रही गलतियों को भाषा के विकास के अनिवार्य चरण के रूप में स्वीकार किया जाना चाहिए जिससे विद्यार्थी अबाध रूप से बिना झिझक लिखित और मौखिक अभिव्यक्ति करने में उत्साह का अनुभव करें। विद्यार्थियों पर शुद्धि का ऐसा दबाव नहीं होना चाहिए कि वे तनावग्रस्त माहौल में पड़ जाएँ। उन्हें भाषा के सहज, कारगर और रचनात्मक रूपों से इस तरह परिचित कराना उचित है कि वे स्वयं सहजरूप से भाषा का सृजन कर सकें।
- गलत से सही दिशा की ओर पहुँचने का प्रयास हो। विद्यार्थी स्वतंत्र और अबाध रूप से लिखित और मौखिक अभिव्यक्ति करे। अगर कहीं भूल होती है तो अध्यापक को अपनी अध्यापन–शैली में परिवर्तन की आवश्यकता होगी।
- ऐसे शिक्षण–बिंदुओं की पहचान की जाए जिससे कक्षा में विद्यार्थी निरंतर सक्रिय भागीदारी करें और अध्यापक भी इस प्रक्रिया में उनका साथी बने।
- हर भाषा का अपना एक नियम और व्याकरण होता है। भाषा की इस प्रकृति की पहचान कराने में परिवेशगत और पाठगत संदर्भों का ही प्रयोग करना चाहिए। यह पूरी प्रक्रिया ऐसी होनी चाहिए कि विद्यार्थी स्वयं को शोधकर्ता समझे तथा अध्यापक इसमें केवल निर्देशन करें।
- हिंदी में क्षेत्रीय प्रयोगों, अन्य भाषाओं के प्रयोगों के उदाहरण से यह बात स्पष्ट की जा सकती है कि भाषा अलगाव में नहीं बनती और उसका परिवेश अनिवार्य रूप से बहुभाषिक होता है।
- भिन्न क्षमता वाले विद्यार्थियों के लिए उपयुक्त शिक्षण–सामग्री का इस्तेमाल किया जाए तथा किसी भी प्रकार से उन्हें अन्य विद्यार्थियों से कमतर या अलग न समझा जाए।
- कक्षा में अध्यापक को हर प्रकार की विभिन्नताओं (लिंग, जाति, वर्ग, धर्म आदि) के प्रति सकारात्मक और संवेदनशील वातावरण निर्मित करना चाहिए।

- परंपरा से चले आ रहे मुहावरों, कहावतों (जैसे, रानी रूठेंगी तो अपना सुहाग लेंगी) आदि के ज़रिए विभिन्न प्रकार के पूर्वाग्रहों की समझ पैदा करनी चाहिए और उनके प्रयोग के प्रति आलोचनात्मक दृष्टि विकसित करनी चाहिए।
- मध्यकालीन काव्य की भाषा के मर्म से विद्यार्थी का परिचय कराने के लिए ज़रूरी होगा कि किताबों में आए काव्यांशों की संगीतबद्ध प्रस्तुतियों के ऑडियो–वीडियो कैसेट तैयार किए जाएँ। अगर आसानी से कोई गायक/गायिका मिले तो कक्षा में मध्यकालीन साहित्य के अध्यापन–शिक्षण में उससे मदद ली जानी चाहिए।
- वृत्तचित्रों और फ़ीचर फ़िल्मों को शिक्षण–सामग्री के तौर पर इस्तेमाल करने की ज़रूरत है। इनके प्रदर्शन के क्रम में इन पर लगातार बातचीत के ज़रिए सिनेमा के माध्यम से भाषा के प्रयोग की विशिष्टता की पहचान कराई जा सकती है और हिंदी की अलग–अलग छटा दिखाई जा सकती है।
- कक्षा में सिर्फ एक पाठ्यपुस्तक की भौतिक उपस्थिति से बेहतर यह है शिक्षक के हाथ में तरह–तरह की पाठ्यसामग्री को विद्यार्थी देख सकें और शिक्षक उनका कक्षा में अलग–अलग मौकों पर इस्तेमाल कर सकें।
- भाषा लगातार ग्रहण करने की क्रिया में बनती है, इसे प्रदर्शित करने का एक तरीका यह भी है कि शिक्षक खुद यह सिखा सकें कि वे भी शब्दकोश, साहित्यकोश, संदर्भग्रंथ की लगातार मदद ले रहे हैं। इससे विद्यार्थियों में इनके इस्तेमाल करने को लेकर तत्परता बढ़ेगी। अनुमान के आधार पर निकटतम अर्थ तक पहुँचकर संतुष्ट होने की जगह वे अधिकतम अर्थ की खोज करने का अर्थ समझ जाएँगे। इससे शब्दों की अलग–अलग रंगत का पता चलेगा, वे शब्दों के बारीक अंतर के प्रति और सजग हो पाएँगे।

0;kdj.k fcn

d{kk 9 ¼uoh½

- उपसर्ग, प्रत्यय
- समास
- अर्थ की दृष्टि से वाक्य भेद
- अलंकार–शब्दालंकार – अनुप्रास, यमक, श्लेष अर्थालंकार – उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, अतिशयोक्ति, मानवीकरण

d{kk 10 ¼n l oh½

- रचना के आधार पर वाक्य भेद
- वाक्य
- पद – परिचय
- रस

Jo.k o okpu ¼ekSf[kd@ckyuk½ lac/kh ;kX;rk,¡

Jo.k ¼lquuk½ dk'ky

- वर्णित या पठित सामग्री, वार्ता, भाषण, परिचर्चा, वार्तालाप, वाद–विवाद, कविता–पाठ आदि का सुनकर अर्थ ग्रहण करना, मूल्यांकन करना और अभिव्यक्ति के ढंग को जानना।
- वक्तव्य के भाव, विनोद, व उसमें निहित संदेश, व्यंग्य आदि को समझना।
- वैचारिक मतभेद होने पर भी वक्ता की बात को ध्यानपूर्वक, धैर्यपूर्वक व शिष्टाचारानुकूल प्रकार से सुनना व वक्ता के दृष्टिकोण को समझना।
- ज्ञानार्जन, मनोरंजन व प्रेरणा ग्रहण करने हेतु सुनना।
- वक्तव्य का आलोचनात्मक विश्लेषण कर सुनकर उसका सार ग्रहण करना।

Jo.k ¼lquuk½ dk eY;kdu

परीक्षक किसी प्रासंगिक विषय पर एक अनुच्छेद का स्पष्ट वाचन करेगा। अनुच्छेद तथ्यात्मक या सुझावात्मक हो सकता है। अनुच्छेद लगभग 150 शब्दों का होना चाहिए। परीक्षक को सुनते–सुनते परीक्षार्थी अलग कागज़ पर दिए हुए श्रवण बोधन के अभ्यासों को हल कर सकेंगे। अभ्यास रिक्त स्थान पूर्ति, बहुविकल्पी अथवा सत्य/असत्य का चुनाव आदि विधाओं में हो सकते हैं।

okpu ¼ckyuk½ dk'ky

- बोलते समय भली प्रकार उच्चारण करना, गति, लय, आरोह–अवरोह उचित बलाघात व अनुतान सहित बोलना, सस्वर कविता–वाचन, कथा–कहानी अथवा घटना सुनाना।
- आत्मविश्वास, सहजता व धाराप्रवाह बोलना, कार्यक्रम–प्रस्तुति।
- भावों का सम्मिश्रण जैसे हर्ष, विषाद, विस्मय, आदर आदि को प्रभावशाली रूप से व्यक्त करना, भावानुकूल संवाद–वाचन।
- औपचारिक व अनौपचारिक भाषा में भेद कर सकने में कुशल होना व प्रतिक्रियाओं को नियंत्रित व शिष्ट भाषा में प्रकट करना।
- मौखिक अभिव्यक्ति को क्रमबद्ध, प्रकरण की एकता सहित व यथासंभव संक्षिप्त रखना।
- स्वागत करना, परिचय कर देना, धन्यवाद देना, भाषण, वाद–विवाद, कृतज्ञता ज्ञापन, संवेदना व बधाई इत्यादि मौखिक कौशलों का उपयोग।
- मंच भय से मुक्त होकर प्रभावशाली ढंग से 5–10 मिनट तक भाषण देना।

okpu ¼ckyuk½ dk ijh{k.k

- चित्रों के क्रम पर आधारित वर्णनः इस भाग में अपेक्षा की जाएगी कि परीक्षार्थी विवरणात्मक भाषा का प्रयोग करें।
- किसी चित्र का वर्णनः (चित्र लोगों या स्थानों के हो सकते हैं)।
- किसी निर्धारित विषय पर बोलना, जिससे वह अपने व्यक्तिगत अनुभव का प्रत्यास्मरण कर सके।
- कोई कहानी सुनाना या किसी घटना का वर्णन करना।

यहाँ इस तथ्य पर बल देना आवश्यक है कि संपूर्ण सत्र के दौरान वाचन कौशलों का मूल्यांकन एक नियमित व सतत् प्रक्रिया होनी चाहिए। वार्तालाप कौशलों के मूल्यांकन के लिए एक मापक्रम नीचे दिया गया है। इसमें प्रत्येक कौशल के लिए विद्यार्थियों को एक से पांच के मध्य अंक प्रदान किए जाते हैं परंतु 1, 2, 3, 4 तथा 5 पट्टिकाओं हेतु ही

विनिर्दिष्टताएँ स्पष्ट की गई हैं। विद्यार्थियों को वर्ष के प्रारम्भ में ही यह सूचित कर दिया जाना चाहिए कि उनका कक्षा में सहभागिता का मूल्यांकन इस प्रकार किया जाना है।

कौशलों के अंतरण का मूल्यांकन के लिए मापक्रम

Jo.k ¼lquuk½		okpu ¼cksyuk½	
1	विद्यार्थी में परिचित संदर्भो में प्रयुक्त शब्दों और पदों को समझने की सामान्य योग्यता है, किन्तु सुसंबद्ध आशय को नहीं समझ पाता।	1	शिक्षार्थी केवल अलग–अलग शब्दों और पदों के प्रयोग की योग्यता प्रदर्शित करता है किन्तु एक सुसंबद्ध स्तर पर नहीं बोल सकता।
2	छोटे सुसंबद्ध कथनों को परिचित संदर्भो में समझने की योग्यता है।	2	परिचित संदर्भो में केवल छोटे सुसंबद्ध कथनों का सीमित शुद्धता से प्रयोग करता है।
3	परिचित या अपरिचित दोनों संदर्भो में कथित सूचना को स्पष्ट समझने की योग्यता है। अशुद्धियाँ करता है जिससे प्रेषण में रुकावट आती है।	3	अपेक्षित दीर्घ भाषण में अधिक जटिल कथनों के प्रयोग की योग्यता प्रदर्शित करता है अभी भी कुछ अशुद्धियाँ करता है। जिससे प्रेषण में रुकावट आती है।
4	दीर्घ कथनों की शृंखला को पर्याप्त शुद्धता से समझता है और निष्कर्ष निकाल सकता है।	4	अपरिचित स्थितियों में विचारों को तार्किक ढंग से संगठित कर धारा प्रवाह रूप में प्रस्तुत कर सकता है। ऐसी गलतियाँ करता है जिनसे प्रेषण में रुकावट नहीं आती।
5	जटिल कथनों के विचार–बिंदुओं को समझने की योग्यता प्रदर्शित करता है, उद्‌देश्य के अनुकूल सुनने की कुशलता प्रदर्शित करता है।	5	उद्देश्य और श्रोता के लिए उपयुक्त शैली को अपना सकता है, केवल मामूली गलतियाँ करता है।

fVIi.kh %

- परीक्षण से पूर्व परीक्षार्थी को तैयारी के लिए कुछ समय दिया जाए।
- विवरणात्मक भाषा में वर्तमान काल का प्रयोग अपेक्षित है।
- निर्धारित विषय परीक्षार्थी के अनुभव संसार के हों, जैसे : कोई चुटकुला या हास्य–प्रसंग सुनाना, हाल में पढ़ी पुस्तक या देखे गए सिनेमा की कहानी सुनाना।
- जब परीक्षार्थी बोलना प्रारंभ कर दे तो परीक्षक कम से कम हस्तक्षेप करें।

iBu dkS'ky

पठन क्षमता का मुख्य उद्देश्य ऐसे व्यक्तियों का निर्माण करने में निहित है जो स्वतंत्र रूप से चिंतन कर सकें तथा जिनमें न केवल अपने स्वयं के ज्ञान का निर्माण की क्षमता हो अपितु वे इसका आत्मावलोकन भी कर सकें।

- सरसरी दृष्टि से पढ़ पाठ का केंद्रीय विचार ग्रहण कर लेना।
- एकाग्रचित्त हो एक अभीष्ट गति के साथ मौन पठन करना।
- पठित सामग्री पर अपनी प्रतिक्रिया प्रकट कर सकना।
- भाषा, विचार एवं शैली की सराहना कर सकना।
- साहित्य के प्रति अभिरुचि का विकास करना।
- संदर्भ के अनुसार शब्दों के अर्थ–भेदों को पहचान लेना।
- किसी विशिष्ट उद्‌देश्य को ध्यान में रखते हुए तत्सम्बन्धी विशेष स्थल को पहचान लेना।

- पठित सामग्री के विभिन्न अंशों का परस्पर संबंध समझना।
- पठित अनुच्छेदों के शीर्षक एवं उपशीर्षक देना।
- कविता के प्रमुख उपादान तुक, लय, यति आदि से परिचित होना।

fVIi.kh % पठन के लिए सामाजिक, सांस्कृतिक, प्राकृतिक, कलात्मक, मनोवैज्ञानिक, वैज्ञानिक तथा खेल–कूद और मनोरंजन संबंधी साहित्य के सरल अंश चुने जाएँ।

fy[kus dh ;kX;rk,¡

- लिपि के मान्य रूप का ही व्यवहार करना।
- विराम–चिह्नों का सही प्रयोग करना।
- लेखन के लिए सक्रिय (व्यवहारोपयोगी) शब्द भंडार की वृद्धि करना।
- प्रभावपूर्ण भाषा तथा लेखन–शैली का स्वाभाविक रूप से प्रयोग करना।
- उपयुक्त अनुच्छेदों में बाँटकर लिखना।
- प्रार्थना पत्र, निमंत्रण पत्र, बधाई पत्र, संवेदना पत्र, आदेश पत्र, एस. एम. एस. आदि लिखना और विविध प्रपत्रों को भरना।
- विविध स्रोतों से आवश्यक सामग्री एकत्र कर अभीष्ट विषय पर निबंध लिखना।
- देखी हुई घटनाओं का वर्णन करना और उन पर अपनी प्रतिक्रिया प्रकट करना।
- पढ़ी हुई कहानी को संवाद में परिवर्तित करना और संवाद को कहानी में।
- समारोहों और गोष्ठियों की सूचना और प्रतिवेदन तैयार करना।
- सार, संक्षेपीकरण, भावार्थ लिखना।
- गद्य एवं पद्य अवतरणों की व्याख्या लिखना।
- स्वानुभूत विचारों और भावनाओं को स्पष्ट, सहज और प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त करना।
- क्रमबद्धता और प्रकरण की एकता बनाए रखना।
- अभिव्यक्ति में सौष्ठव एवं संक्षिप्तता का ध्यान रखना।
- लिखने में मौलिकता और सर्जनात्मकता लाना।

jpukRed vfHkO;fDr

- वाद–विवाद

  विषय – शिक्षक विषय का चुनाव स्वयं करें।

  आधार बिंदु – तार्किकता, भाषण कला, अपनी बात अधिकारपूर्वक कहना।

- कवि सम्मेलन

  पाठ्यपुस्तक में संकलित कविताओं के आधार पर कविता पाठ

  या

  मौलिक कविताओं की रचना कर कवि सम्मेलन या अंत्याक्षरी

  ### vk/kkj fcanq

  - अभिव्यक्ति
  - गति, लय, आरोह–अवरोह सहित कविता वाचन

- ➢ मंच पर बोलने का अभ्यास / या मंच भय से मुक्ति

- कहानी सुनाना/कहानी लिखना या घटना का वर्णन/लेखन

  vk/kj fcn|

  - ➢ संवाद – भावानुकूल, पात्रानुकूल
  - ➢ घटनाओं का क्रमिक विवरण
  - ➢ प्रस्तुतीकरण
  - ➢ उच्चारण

- परिचय देना और परिचय लेना – पाठ्य पुस्तक के पाठों से प्रेरणा लेते हुए आधुनिक तरीके से किसी नए मित्र से संवाद स्थापित करते हुए अपना परिचय सरल शब्दों में देना तथा उसके विषय में जानकारी प्राप्त करना।
- अभिनय कला – पाठों के आधार पर विद्यार्थी अपनी अभिनय प्रतिभा का प्रदर्शन कर भाषा में संवादों की अदायगी का प्रभावशाली प्रयोग कर सकते हैं, नाटक एक सामूहिक क्रिया है। अतः नाटक के लेखन, निर्देशन संवाद, अभिनय, भाषा व उद्देश्य इत्यादि को देखते हुए शिक्षक स्वयं अंकों का निर्धारण कर सकता है ।
- आशुभाषण– विद्यार्थियों की अनुभव परिधि से संबंधित विषय।
- सामूहिक चर्चा– विद्यार्थियों की अनुभव परिधि से संबंधित विषय।

eY;kdu d lkdr fcnvk dk fooj.k

iLrrhdj.k

- आत्मविश्वास
- हाव–भाव के साथ
- प्रभावशाली प्रस्तुति
- तार्किकता
- स्पष्टता

fo"k; oLr|

- विषय की सही अवधारणा
- तर्क सम्मत

Hkk"kk

- शब्द चयन व स्पष्टता, स्तर और अवसर के अनुकूल हों ।

mPpkj.k

- स्पष्ट उच्चारण, सही अनुतान, आरोह–अवरोह पर अधिक बल देना चाहिए ।

bl voLFkk ij cy fn, tku ;kX; dN thou eY;

- सच्चाई, आत्म–अनुशासन
- सहकारिता, सहानुभूति
- न्याय, समानता

- पहल, नेतृत्व
- ईमानदारी, निष्ठा
- जनतांत्रिकता, देशभक्ति
- उत्तरदायित्व की भावना

fgUnh ikB~;Øe&v dkM l[;k ¼002½
d{kk uoha fgUnh ^v*& ladfyr ijh{kkvksa grq ikB~;Øe fofunsZ'ku 2017&2018

ijh{kk Hkkj foHkktu					
			fo"k;oLrq	mi Hkkj	dqy Hkkj
1	पठन कौशल गद्यांश व काव्यांश पर शीर्षक का चुनाव, विषय–वस्तु का बोध, भाषिक बिंदु/संरचना आदि पर अति लघूत्तरात्मक एवं लघूत्तरात्मक प्रश्न				15
	(अ)		एक अपठित गद्यांश (100 से 150 शब्दों के) (1x2=2) (2x3=6)	8	
	(ब)		एक अपठित काव्यांश (100 से 150 शब्दों के) (1x3=3) (2x2=4)	7	
2	व्याकरण के लिए निर्धारित विषयों पर विषय–वस्तु का बोध, भाषिक बिंदु/संरचना आदि पर प्रश्न (1x15)				15
	व्याकरण				
	1		शब्द निर्माण उपसर्ग – 2 अंक, प्रत्यय – 2 अंक, समास – 3 अंक	7	
	2		अर्थ की दृष्टि से वाक्य भेद – 4 अंक	4	
	3		अलंकार – 4 अंक (शब्दालंकार अनुप्रास, यमक, श्लेष) (अर्थालंकार उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, अतिशयोक्ति, मानवीकरण)	4	
3	पाठ्यपुस्तक क्षितिज भाग–1 व पूरकपाठ्यपुस्तक कृतिका भाग–1				
	(अ)		गद्य खण्ड	13	30
		1	क्षितिज से निर्धारित पाठों में से गद्यांश के आधार पर विषय–वस्तु का बोध, भाषिक बिंदु/संरचना आदि पर प्रश्न। (2+2+1)	5	
		2	क्षितिज से निर्धारित गद्य पाठों के आधार पर विद्यार्थियों की उच्च चिंतन व मनन क्षमताओं का आकलन करने हेतु प्रश्न। (2x4)	8	
	(ब)		काव्य खण्ड	13	
		1	काव्यबोध व काव्य पर स्वयं की सोच की परख करने हेतु क्षितिज से निर्धारित कविताओं में से काव्यांश के आधार पर प्रश्न। (2+2+1)	5	
		2	क्षितिज से निर्धारित कविताओं के आधार पर विद्यार्थियों का काव्यबोध परखने हेतु प्रश्न। (2x4)	8	
	(स)		पूरक पाठ्यपुस्तक कृतिका भाग–1	4	

		पूरक पुस्तिका 'कृतिका' के निर्धारित पाठों पर आधारित एक मूल्य परक प्रश्न पूछा जाएगा। इस प्रश्न का कुल भार पाँच अंक होगा। ये प्रश्न विद्यार्थियों के पाठ पर आधारित मूल्यों के प्रति उनकी संवेदनशीलता को परखने के लिए होगा। (4x1)	4	
4	लेखन			20
	(अ)	विभिन्न विषयों और संदर्भों पर विद्यार्थियों के तर्कसंगत विचार प्रकट करने की क्षमता को परखने के लिए संकेत बिन्दुओं पर आधारित समसामयिक एवं व्यावहारिक जीवन से जुड़े हुए विषयों पर 200 से 250 शब्दों में किसी एक विषय पर निबंध। (10x1)	10	
	(ब)	अभिव्यक्ति की क्षमता पर केन्द्रित औपचारिक अथवा अनौपचारिक विषयों में से किसी एक विषय पर पत्र। (5x1)	05	
	(स)	किसी एक विषय पर 'संवाद लेखन'। (5x1)	05	
		dqy		80

fgUnh ikB~;Øe&v dksM l[;k ¼002½
d{kk nloha fgUnh ^v* ijh{kk gsrq ikB~;Øe fofunsZ'ku 2017&2018

ijh{kk gsrq Hkkj foHkktu					
		fo"k;oLrq		mi Hkkj	dqy Hkkj
1	पठन कौशल गद्यांश व काव्यांश पर शीर्षक का चुनाव, विषय–वस्तु का बोध, भाषिक बिंदु/संरचना आदि पर अति लघूत्तरात्मक एवं लघूत्तरात्मक प्रश्न				15
	(अ)	एक अपठित गद्यांश (100 से 150 शब्दों के) (1x2=2) (2x3=6)		8	
	(ब)	एक अपठित काव्यांश (100 से 150 शब्दों के) (1x3=3) (2x2=4)		7	
2	व्याकरण के लिए निर्धारित विषयों पर विषय–वस्तु का बोध, भाषिक बिंदु/संरचना आदि पर प्रश्न (1x15)				15
	1	रचना के आधार पर वाक्य भेद (3 अंक)		03	
	2	वाच्य (4 अंक)		04	
	3	पद–परिचय (4 अंक)		04	
	4	रस (4 अंक)		04	
3	पाठ्यपुस्तक क्षितिज भाग–2 व पूरकपाठ्यपुस्तक कृतिका भाग–2				30
	(अ)		गद्य खण्ड	13	
		1	क्षितिज से निर्धारित पाठों में से गद्यांश के आधार पर विषय–वस्तु का बोध, भाषिक बिंदु/संरचना आदि पर प्रश्न। (2+2+1)	05	
		2	क्षितिज से निर्धारित गद्य पाठों के आधार पर विद्यार्थियों की उच्च चिंतन व मनन क्षमताओं का आंकलन करने हेतु प्रश्न। (2x4)	08	
	(ब)		काव्य खण्ड	13	

		1	काव्यबोध व काव्य पर स्वयं की सोच की परख करने हेतु क्षितिज से निर्धारित कविताओं में से काव्यांश के आधार पर प्रश्न। (2+2+1)	05	
		2	क्षितिज से निर्धारित कविताओं के आधार पर विद्यार्थियों का काव्यबोध परखने हेतु प्रश्न। (2x4)	08	
	(स)	पूरक पाठ्यपुस्तक कृतिका भाग–2			
		पूरक पुस्तिका 'कृतिका' के निर्धारित पाठों पर आधारित एक मूल्य परक प्रश्न पूछा जाएगा। इस प्रश्न का कुल भार पाँच अंक होगा। ये प्रश्न विद्यार्थियों के पाठ पर आधारित मूल्यों के प्रति उनकी संवेदनशीलता को परखने के लिए होगा। (4x1)		04	
4	लेखन				
	(अ)	विभिन्न विषयों और संदर्भों पर विद्यार्थियों के तर्कसंगत विचार प्रकट करने की क्षमता को परखने के लिए संकेत बिन्दुओं पर आधारित समसामयिक एवं व्यावहारिक जीवन से जुड़े हुए विषयों पर 200 से 250 शब्दों में किसी एक विषय पर निबंध। (10x1)		10	20
	(ब)	अभिव्यक्ति की क्षमता पर केन्द्रित औपचारिक अथवा अनौपचारिक विषयों में से किसी एक विषय पर पत्र। (5x1)		05	
	(स)	विषय से संबंधित 25–50 शब्दों के अंतर्गत विज्ञापन लेखन। (5x1)		05	
		d|y			80

i'ui= dk i'ukuqlkj fo'y"k.k ,o ik:i
fgnh ikB~;Øe&v
d{kk&uoeh ,o nloh

fu/kkfjr le; % 3 ?k.V

vf/kdre vd % 80

क्रमांक सं. 5	प्रश्नों का प्रारूप	दक्षता परीक्षण / अधिगम परिणाम	अति लघूत्त –रात्मक 1 अंक	लघूत्त –रात्मक 2 अंक	निबंधात्मक I 4 अंक	निबंधात्मक II 5 अंक	निबंधात्मक III 10 अंक	कुल योग
क	अपठित बोध	अवधारणात्मक बोध, अर्थग्रहण, अनुमान लगाना, विश्लेषण करना, शब्दज्ञान व भाषिक कौशल	05	05				15
ख	व्यावहारिक व्याकरण	व्याकरणिक सरंचनाओं का बोध और प्रयोग, विश्लेषण एवं भाषिक कौशल	15					15
ग	पाठ्य पुस्तक	प्रत्यास्मरण, अर्थग्रहण (भावग्रहण), लेखक के मनोभावो को समझना शब्दों का प्रसंगानुकूल अर्थ समझना, आलोचनात्मक चिंतन, तार्किकता, सराहना, साहित्यिक परंपराओं के परिप्रेक्ष्य में मूल्यांकन, विश्लेषण, सृजनात्मकता, कल्पनाशीलता, कार्य–कारण संबंध स्थापित करना, साम्यता एवं अंतरों की पहचान, अभिव्यक्ति में मौलिकता एवं जीवन मूल्यों की पहचान।	02	12	01			30
घ	रचनात्मक लेखन (लेखन कौशल)	संकेत बिंदुओं का विस्तार, अपने मत की अभिव्यक्ति, सांदाहरण समझाना, औचित्य निर्धरण, भाषा में प्रवाहमयता, सटीक शैली, उचित प्रारूप का प्रयोग, अभिव्यक्ति की मौलिकता, सृजनात्मकता एवं तार्किकता				02	01	20
		कुल	1 x 22 = 22	2 x 17 = 34	4 x 1 = 4	5 x 2 = 10	10 x 1 = 10	80